1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पाहि माम्। यजु0 2/16
प्रभो ! मेरी रक्षा करो।
O God ! Protect me from all sides and in every way.

वर्ष 39, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 दिसम्बर, 2015 से रविवार 3 जनवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली एवं आस-पास की समस्त आर्य समाजों, आर्य गुरुकुलों, आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में

स्वामी श्रद्धानन्द जी का 89वां बलिदान दिवस रामलीला मैदान में सम्पन्न

'स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा चलाए गए दलितोद्धार अभियान की आज और अधिक आवश्यकता'

- अमेरिका और कनाडा के आर्य प्रतिनिधियों ने की शिरकत
- विशाल शोभायात्रा ने समस्त आर्य जगत को एक सूत्र में बांधा

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य एवं दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के सहयोग से हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी का 89वां बलिदान दिवस दिनांक 25 दिसम्बर 2015 को श्रद्धांजलि महासभा के रूप में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन ...शेष पृष्ठ 4, 5 पर

विशाल जनसमूह द्वारा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित

1. 'आर्य लोग बाहर से आए' यह बात शैक्षिक पुस्तकों से हटाई जाए।
2. मदर टेरेसा को संत की उपाधि-भारत में अंधविश्वास और धर्मांतरण को बढ़ाने का षड्यंत्र, सरकार को किया आगाह।

नया वर्ष नया क्या देगा?

हर साल 1 जनवरी को नया साल मनाया जाता है, शानदार आतिशबाजी कर पूरा विश्व अगले 365 दिन के केलेण्डर में प्रवेश करता है। किन्तु प्रश्न यही अटकता है कि आखिर उसमे नया क्या आएगा? क्या दिल्ली की जहरीली हवा साफ हो जायेगी? क्या पानी शुद्ध होकर मिलने लगेगा? क्या सभ्य कहलाये जाने वाला समाज अपनी जिम्मेदारी समझने लगेगा! आज दिल्ली समेत देश के कई शहरो में ये बहस तेज है कि प्रदूषण को कैसे काबू किया जाये।

एक पीढ़ी जब समय के साथ आगे बढ़ती है तो दूसरी पीढ़ी के हाथ में कुछ चीजे देकर जाती है जिन्हें हम आजादी, न्याय, परम्परा, परिवार और प्रकृति के नाम से जानते है, और हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है कि हम उन्हें सम्हालकर रखें ताकि हम भी अगली पीढ़ी तक उसे सुरक्षित पंहुचा सकें किन्तु आज के हालात देखकर लगता है कि हम कहीं ना कहीं अपने कर्त्तव्यों से विमुख हुए हैं जो आज हमें स्वच्छ वायु भी बाजार से खरीदनी पड़ेगी प्रकृति ने अग्नि जल, वायु, पर सबका समान अधिकार दिया किन्तु जिस तरह बोतलबंद पानी और (गैस सिलेंडर) अग्नि के बाद अब केंट कम्पनी ने हवा शुद्ध करने की मशीन बाजार में उतारी है उसे देखकर तो यही लगता है कि प्रकृति और जीवन पर केवल धन का अधिकार होने लगा है! रामायण में एक प्रसंग है कि खरदूषण नाम के राक्षस ऋषि-मुनियों को परेशान किया करते थे तब गुरु वसिष्ठ ने दशरथ पुत्र राम,लक्ष्मण के सहयोग से उनका अंत किया था। प्रदूषण शब्द का शाब्दिक अर्थ दूषित होता है अत: जरूर वहां का वातावरण दूषित रहा होगा जिसे यज्ञ द्वारा शुद्ध किया गया होगा। आज जिस तरह से देश की नदियाँ, झीलें, प्रदूषण की मार झेल रही हैं और लोग साफ पानी, शुद्ध हवा को तरस रहे है उसे देखकर लगता है कि नया वर्ष भी कुछ ज्यादा विशेष नहीं होगा।

आज जिस तरह मनुष्य ने अपनी सुख सुविधाओं के लालच में अपना जीवन दांव पर लगा दिया ऐसा नहीं कि अब कुछ उपचार ...शेष पेज 3 पर

विश्व पुस्तक मेला नई दिल्ली में विशाल वैदिक साहित्य स्टाल

दिनांक 9-17 जनवरी 2016, प्रगति मैदान, नई दिल्ली ज्ञान विकास के लिए मेले में अवश्य पधारें विस्तृत जानकारी पृष्ठ 8 पर

स्वाध्याय

पुकार सुनने पर वह रक्षा करता है।

आ घा गमद्यदि श्रवत् सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम्।।
ऋ. 1/30/9 साम. उ.1/2/1/1; अथर्व. 20/26/2
ऋषि- आजीगर्तिः शुनःशेपः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-निचृद्गायत्री।।

विनय- वह आ जाता है, निश्चय से आ जाता है, हमारे पास प्रकट हो जाता है यदि वह सुन लेवे। बस, उसके सुन लेने की देर है। उस समय अपनी सुनवाई कराना, अपनी रसाई करना निःसन्देह कठिन है। उस तक हमारी पुकार पहुंच जाए, इसके लिए हम में कुछ योग्यता चाहिए, हममें कुछ सामर्थ्य चाहिए, परंतु इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि वह परमात्मदेव यदि पुकार सुन ले, यदि हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर ले तो वह निश्चय से आ जाता है और तब वह आता है अपनी सहस्रों प्रकार की रक्षा-शक्तियों के साथ हमारी रक्षा के लिए मानो वह अनन्त महाशक्ति सेना के साथ आ पहुंचता है। हमारी रक्षा के लिए हो उसकी तनिक-सी शक्ति ही बहुत होती है, परंतु तब यह पता लग जाता है कि उसकी रक्षा-शक्ति असीम है। वह हमारे 'हव' पर -पुकार पर अपने 'वाज' के साथ (अपने ज्ञान-बल के साथ) आ पहुंचता है। वह पीड़ितों की रक्षा कर जाता है और हम अज्ञानान्धकार में ठोकरें खाते हुओं के लिए ज्ञान-प्रकाश चमका जाता है, परन्तु यदि वह सुन लेवे। कौन कहता है कि वह सुनता नहीं? निःसंदेह, हमारी भांति उसके कान नहीं, परन्तु वह परमात्मदेव बिना कान के सुनता है। यदि हमारी प्रार्थना कल्याण की प्रार्थना होती है और वह सच्चे हृदय से, सर्वात्मभाव से की गई होती है तो उस प्रार्थना में यह शक्ति होती है कि वह प्रभु के दरबार में पहुंच सके; हम में इतनी स्वार्थशून्यता, आत्मत्याग और पवित्रता हो कि हमारी पुकार उसके यहां तक पहुंच सके। यदि हमारी प्रार्थना में इतनी शक्ति हो, हम अन्धकार में पड़े हुए, दुःख-पीड़ितों के हार्दिक करुण- क्रन्दनों में इतना बल हो कि इन्द्रदेव उसे सुन ले तो फिर क्या है! तब तो क्षण-भर में वे करुणासिन्धु हम डूबतों को बचाने के लिए आ पहुंचते हैं। बस, हमारी प्रार्थना उन तक पहुंचे, हमारी पुकार में इतना बल हो, तो देखो वे प्रभु अपने सब साज-सामान के साथ, अपने ज्ञान, बल और ऐश्वर्य के भण्डार के साथ, अपनी दिव्य विभूतियों की फौज के साथ हम मरतों को बचाने के लिए, हम निर्बलों में बल संचार करने के लिए, हम अन्धों को अपनी ज्योति से चकाचौंध करने के लिए आ पहुंचते हैं।

शब्दार्थ- यदि-यदि नः हवम्-हमारी पुकार श्रवत्-वह इन्द्र सुन लेवे तो वह सहस्रिणीभिः ऊतिभिः-अपनी सहस्रों बलशालिनी रक्षा-शक्तियों के साथ और वाजेभिः-सहस्रों ज्ञान बलों के साथ घ-निश्चय से उपागम्-आ पहुंचता है।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

खोदा पहाड़ निकली चुहिया

कहने का मूल तात्पर्य यह है कि कोई बड़ा काम करो और उसका हल कुछ ना निकले इसी का एक जिन्दा उदहारण फ्रांस की राजधानी पेरिस में देखने को मिला। पृथ्वी के बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन के मसले पर पेरिस में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन में हुए समझौते की हर ओर तारीफ हो रही है और इसे ऐतिहासिक समझौता करार दिया है। धरती के बढ़ते तापमान और कार्बन उत्सर्जन पर अंकुश लगाने वाले इस समझौते को 196 देशों ने स्वीकार किया है। प्रधानमंत्री जी ने अपने 39 पन्नों के मसौदे को जिस तरह यजुर्वेद के मन्त्र से समझाने की कोशिश की वो वाकई स्वागत योग्य होने के साथ सत्य भी है कि बिना वेदों को जाने प्रकृति को जानना समझना असम्भव है।

इस समझौते के अनुसार, वैश्विक तापमान की सीमा दो डिग्री सेल्सियस से 'काफी कम' रखने का प्रस्ताव है। इस सब को देखकर सुनकर लगा कि जैसे आज इन्सान और प्रकृति की मानो कोई प्रतियोगिता हो और इन्सान हर हाल में प्रकृति से जीतना चाह रहा हो किन्तु प्रकृति और मानव के इस युद्ध में अंततः यह बात हर कोई जानता है कि जीत अंत में प्रकृति की होगी तो क्यों प्रकृति से नाहक बैर मोल लिया जाये? आज दो डिग्री तापमान पर जिस तरह पूरा विश्व समुदाय एकत्र हुआ वैसे देखा जाये तो तापमान वृद्धि पर अंकुश की यह बात भारत और चीन जैसे विकासशील देशों की पसंद के अनुरूप नहीं है, जो औद्योगिकीकरण के कारण कार्बन गैसों के बड़े उत्सर्जक हैं। लेकिन भारत ने शिखर बैठक के इन नतीजों को 'संतुलित' और आगे का रास्ता दिखाने वाला बताया।

इस समझौते में सबको अलग-अलग जिम्मेदारी के सिद्धांत को जगह दी गई है, जिसकी भारत लंबे अर्से से मांग करता रहा है। जबकि अमेरिका और दूसरे विकसित देश इस प्रावधान को कमजोर करना चाहते थे। पेरिस समझौते में कहा गया है कि सभी पक्ष, जिसमें विकासशील देश भी शामिल हैं- कार्बन उत्सर्जन कम करने के कदम उठायें। इसका अर्थ हुआ कि विकासशील देशों को इसके लिए कदम उठाने होंगे, जो कि विकास के उनके सपने में एक रोड़ा साबित हो सकता है और विकसित देशों ने चालाकी दिखाते हुए पर्यावरण को स्वस्थ रखने में अपनी जिम्मेदारी में कटौती कर सारी जिम्मेदारी विकासशील देशों के कंधो पर डाल दी और उन्होंने अपनी तरफ से कह दिया कि किसी भी क्षति और घाटे के लिए हम जिम्मेदार नहीं होंगे न हम पर किसी मुआवजे आदि का (विकसित देशों) पर कोई वास्तविक दायित्व भी नहीं होगा। अगर कहा जाये जलवायु सम्मेलन एक किस्म से एक व्यापारिक सम्मेलन था, बड़े देश छोटे-छोटे देशों से पैसा वसूल करेंगे क्योंकि विकसित देश आज आर्थिक रूप से और औधोगिक रूप से सक्षम है। किन्तु जैसे ही विकासशील देशों ने उद्योगों के जरिये अपने विकास का रास्ता खोजा तो ही विकसित देश जलवायु परिवर्तन का नगाड़ा बजा बैठे। हालाँकि जलवायु परिवर्तन सच में ही एक विचारणीय विषय है पर क्या जहरीली गैसों के लिए विकासशील देश ही जिम्मेदार हैं?

आज जिस तरीके से समस्त विश्व विकास के लिए तड़प रहा है किन्तु यह एक बात क्यूँ नहीं सोच रहा है कि विकास मानव समुदाय के लिए किया जा रहा है और विकास से उत्पन्न बीमारी भी मनुष्य समाज को खा रही है। क्या बिना रासायनिक विकास के जीवन नहीं जिया जा सकता? कहने का तात्पर्य यह है कि पैरिस में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन समझौता खोदा पहाड़ निकली चुहिया वाली कहावत चरितार्थ करता है।

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

सत्यधर्म-विचार

प्रश्न 1: क्या 'सत्यधर्म-विचार' भी किसी ग्रन्थ का नाम है?

उत्तर: वास्तव में यह एक धर्म चर्चा है, जो मेला चांदापुर में बड़े-बड़े विद्वानों के बीच सत्य के निर्णय के लिए हुई थी। इसी चर्चा अथवा शास्त्रार्थ को बाद में मुद्रित किया गया, प्रिन्ट करवाया गया, जिससे सब लोग पढ़ सकें और पक्षपात रहित होकर सत्य-असत्य को जान कर जीवन में सत्य को धारण करें। यह धर्म चर्चा 'ब्रह्मविचार, मेला चांदापुर' में प्रतिवर्ष मुन्शी प्यारे लाल की ओर से हुआ करती थी।

प्रश्न 2: यह चर्चा किन-किन मत-संप्रदायों के विद्वानों के बीच हुई?

उत्तर: यह चर्चा आर्यों, ईसाइयों और मुसलमानों के विद्वानों के बीच हुई थी। इसमें आर्यों की ओर से स्वामी दयानन्द और मुंशी इन्द्रमणि जी, ईसाइयों की ओर से पादरी स्काट साहब, पादरी नोविल साहब आदि पांच और मुसलमानों की ओर से मौलवी मोहम्मद कासम साहब, सैयद अब्दुल मंसूर साहब आदि पांच विद्वान् थे।

प्रश्न 3: इस मेले में धर्म चर्चा कितने दिनों तक चली?

उत्तर: यह मेला दो दिन रहा और धर्मचर्चा भी दो दिन तक चली। स्वामी जी तो चाहते थे कि कम से कम पांच दिन और अधिक से अधिक आठ दिन तक मेला रहना चाहिए और चर्चा होनी चाहिए। इससे सभी मतों के विचारों को अच्छी तरह से जाना जा सकता है, परंतु पादरी लोग दो दिन से अधिक ठहरने के लिए तैयार न हुए।

प्रश्न 4: मेले में धार्मिक चर्चा करने का उद्देश्य क्या था?

उत्तर: मेले में धर्म चर्चा करने का उद्देश्य था कि सब लोगों के सामने अलग-अलग मतों से विचार प्रकट होने से पक्षपात रहित होकर सभी सत्य और असत्य का निर्णय कर सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि हम तीनों को उचित है कि पक्षपात छोड़कर प्रीतिपूर्वक सत्य का निश्चय करें, किसी से विरोध करना कदापि योग्य नहीं।

प्रश्न 5. चर्चा के विषय कौन-कौन से थे?

उत्तर: चर्चा के लिए निम्नलिखित पांच प्रश्न चुने गये थे:-

1. सृष्टि को परमेश्वर ने किस चीज से, किस समय और किस लिए बनाया?
2. ईश्वर सब में व्यापक है या नहीं?
3. ईश्वर न्यायकारी और दयालु किस प्रकार है?
4. वेद, बाइबिल और कुरान के ईश्वरोक्त होने में क्या प्रमाण है?
5. मुक्ति क्या है और किस प्रकार मिल सकती है?

प्रश्न 6. क्या सब प्रश्नों पर चर्चा हुई?

उत्तर: प्रथम प्रश्न पर तो कुछ लम्बी चर्चा हुई। प्रातः साढ़े सात से ग्यारह बजे की सभा इसी विषय पर चली। उसके पश्चात् दोपहर की सभा एक बजे प्रारम्भ हुई। तब निश्चय किया गया कि बातें बहुत और समय थोड़ा है। अतः केवल मुक्ति विषय पर विचार किया जाए। वह भी पूरी तरह से नहीं हो पाया था कि मौलवी साहब नामाज पढ़ने के लिए चले गये और चर्चा वहीं अधूरी रह गई।

प्रश्न 7. बाद में इस चर्चा को ग्रन्थबद्ध किसने और कब किया?

उत्तर: महर्षि दयानन्द ने ही इसे ग्रन्थबद्ध करके विक्रम संवत् 1937, श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी, मंगलवार के दिन पूर्ण किया।

प्रश्न 8. यह ग्रन्थ किस भाषा में है?

उत्तर: ऋषि दयानन्द सरस्वती ने यह ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखा।

प्रश्न 9. क्या किसी अन्य भाषा में भी यह ग्रन्थ छपा था?

उत्तर: उपर्युक्त हिन्दी वाले ग्रन्थ से पहले यह ग्रन्थ हिन्दी और उर्दू, दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो चुका था। इसके बायें कालम में हिन्दी और दायें कालम में उर्दू भाषा थी।

प्रश्न 10. पुस्तक का यह संस्करण कब और कहां से छपा था?

उत्तर: पुस्तक का यह प्रथम संस्करण था, जो वैदिक यन्त्रालय, काशी से सं. 1937, भाद्रपद सुदी 6, शुक्रवार (10 सितम्बर 1880) से पूर्व 'मेला चांदापुर' नाम से छपकर प्रकाशित हो चुका था।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

-मो. 09540040339

आर्यों का मूल स्थान-भारत

... बाल्मिकि रामायण में वर्णन है कि सीता जी श्री रामचन्द्र जी को आर्य पुत्र कह कर पुकारती थी। यानी दशरथ आदि राजा अपने को आर्य कहते थे ...

आर्य भारत के मूल निवासी थे या बाहर से भारत में आए इस प्रश्न पर विचार करने से पहले यह विचार करना होगा कि आर्य किसे कहते हैं?

आर्य शास्त्रों में वेदों का स्थान सबसे ऊंचा है। वेद परमात्मा की अमरवाणी है। वेद में परमात्मा आज्ञा देता है कि 'अहं भूमिम दादामार्य' अर्थात् मैंने आर्यो को ही भूमि दी है। आर्यो का विवेचन करते हुए निरूक्त में यास्काचार्य कहते हैं कि आर्य ईश्वर पुत्रः। आर्य ईश्वर की अमैथुनि सृष्टि से उत्पन्न हुए थे। संसार की सबसे प्रथम भाषा वैदिक संस्कृत और संसार का सबसे प्रथम ज्ञान चार वेद, चार ऋषियों की आत्मा में ही परमात्मा ने दिया था।

भारतीय विद्वान आर्यो के विषय में बताते हैं कि जो मनुष्य सभ्यता -शिष्टता, धर्म-कर्म, ज्ञान-विज्ञान और आचार-विचार में तथा शील स्वभाव में श्रेष्ठ हो उसे आर्य कहते हैं।

जर्मनी, फ्रांस और इग्लैंड के विद्वान कोई ठिगने कद वाले आर्य, कोई लम्बा कद वाले तथा कोई बड़ा सिर वाले बताते हैं। उन सब की बेतु की बातें खण्डित हो गई। क्योंकि धर्म-कर्म, ज्ञान-विज्ञान और सभ्यता आदि ये दीक्षा से होती है। आर्य विद्वान होते हैं।

पाश्चात्य विद्वान मध्य एशिया बताते हैं। जब उनसे यह पूछते हैं कि बताओ मध्य एशिया की किस भाषा से आर्यो ने संस्कृत सीखी और वेद कैसे प्राप्त किए? तब संकोच से कहते हैं कि असलियत में शक है। ये विद्वान भी झूठे ही साबित हुए। (-इबिद, पृष्ठ 321)

प्रो. मैक्मूलर ने पहले 'साइंस ऑफ दी लैंग्वेज' में मध्य एशिया लिखा था। बाद में आर्यो की जन्म भूमि कहीं एशिया में ही है यह लिख दिया। (गुड बोर डस अग. 1887) मध्य एशिया और कहीं एशिया में बड़ा अन्तर है। यह भी शक वाली बात करते हैं। भ्रम वाली बात करते हैं।

लोकमान्य तिलक ने 'आर्कटिक होम इन वेदाज, पृष्ठ 32' में लिखा है कि आज से कोई 10000 वर्ष पहले ध्रुव प्रदेश में बर्फ का तूफान आया इसी कारण आर्य लोग वहां से भागे और यूरोप, मध्य एशिया, ईरान और भारत में आकर आबाद हो गए। आर्य जाति को पैदा हुए 21000 वर्ष हुए हैं।

श्री तिलक जी को यह मालूम नहीं था कि बाल्मिकि रामायण में वर्णन है कि सीता जी श्री रामचन्द्र जी को आर्य पुत्र कह कर पुकारती थीं। यानी दशरथ आदि राजा अपने को आर्य कहते थे। रामायण को नौ लाख वर्ष हो गए। आर्यो का अब सन् 2015 में सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53,116 चल रहा है। इस प्रकार ध्रुव प्रदेश का मत भी माननीय नहीं है। ध्रव प्रदेश में बर्फ जमी रहती है वहां मनुष्य रहेगा कैसे?

अब अंग्रेजों की मानसिकता देखिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती अंग्रेजों के सामने उनकी बाइबल का खण्डन करते थे, वेद धर्म को सबका धर्म बताते और आर्यो का सृष्टि के आदि से पाण्डव पर्यन्त भूमण्डल पर राज्य बताते थे। ये बातें सुन कर अंग्रेज तिलमिला गये। उन्होंने भारत के इतिहास में परिवर्तन कर दिया। अंग्रेजों ने इतिहास में लिखा-

'आर्य भारत के मूल निवासी नहीं थे वे किसी बाहर के देश से आए थे। आर्यो ने द्रविड़ों से युद्ध कर के उन्हें परास्त किया और उनका राज्य छीन लिया।' इस षड्यंत्र के तहत अंग्रेजों ने भारत में नफरत फैलाई, उनकी नीति सदा यह रहती है कि फूट डालो और राज करो। अंग्रेजों की इस बात का खण्डन मनुस्मृति करती है। वह बताती है द्रविड़ आर्यो की ही संताने हैं।

मनुस्मृति अध्याय 20 के श्लोक 43-44 में लिखा है कि ये क्षत्रिय जातियां क्रिया लोप से और (याजन अध्ययन प्रायश्चितादि के लिए) ब्राह्मणों के न मिलने से धीरे-धीरे शुद्रता को प्राप्त हो गई (जैसे)।। 43।। प्रोडिक, द्रविड़, काम्बोज, यवन, शक, पारद, अपहलव, चीन, किरात, दरद और खश।।44।। (पुरानी स्मृति)

वर्तमान में जो हिन्दू है। वे अपना धर्म सनातन धर्म बताते हैं किन्तु सनातन की परिभाषा अथर्ववेद के मण्डल 20 सूक्त 9 और मन्त्र 23 में लिखी है। वेद आर्यो की धर्म पुस्तक है। इससे यही सिद्ध है कि हिन्दुओं के पूर्वज आर्य थे और वे भारत के मूल निवासी थे।

अब आप एक विशेष बात पर ध्यान दीजिए। भूतपूर्व संसद सदस्य पडित शिव कुमार शास्त्री की पुस्तक श्रुति सौरभ के पृष्ठ संख्या 405 पर लिखा है-

मध्यकाल के हिन्दुओं ने जीवन की वह कला भुला दी थी, अतः ये क्षीण हो रहे थे। इनके बन्धु, सभी पुरुष और बच्चे नाना छल-प्रपंचों से मुसलमान और इसाई बन रहे थे और ये असहाय टुकर-टुकर देख रहे थे। मुसलमानों के शासनकाल में बड़े-बड़े दिग्गज संस्कृत के विद्वान दान, तीर्थ और जप तप पर बड़े-बड़े पौथे तो रच रहे थे, किन्तु बलपूर्वक भ्रष्ट किए गए अपने इन बन्धुओं को शुद्ध करके पुनः अपने धर्म में लाने का कोई विधान नहीं बना सके। प्रति दस वर्ष की जनगणना में हिन्दुओं की संख्या जिस अनुपात में घट रही थी, उनके अनुसार 45 वर्ष की जनगणना में हिन्दू समाप्त हो जाते और केवल इतिहास के पृष्ठों पर उनका नाम शेष रह जाता।

ऋषि दयानन्द ने परिस्थिति का अध्ययन करके इस नाम शेष सनातन धर्म में प्राणप्रतिष्ठा की। धर्म के नाम पर जो जो अधर्म की बातें इसमें प्रविष्ठ हो गई थी, उनका तीव्र खण्डन करके इसमें से विजातीय सड़ा-गला हिस्सा काट के फेंक दिया और वेद शास्त्रोक्त धर्म का सच्चा स्वरूप संसार के सामने प्रस्तुत किया। जो योरोपियन विद्वान वेद के दूषित अर्थ करके अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों को इसाई बनाने का स्पप्न देख रहे थे, उनकी आशाओं पर तुषारापात हो गया।

ऐसे भयंकर समय में ऋषि ने धर्म के सनातन स्वरूप को समझाया और उसे उसके गौरवान्वित पद पर प्रतिष्ठित किया। वास्तविक बात यह है कि आर्यो की सन्तानें भारत में रह कर भी अपने आर्यत्व को भुला चुकी हैं। वेद में श्रेष्ठ मनुष्य को आर्य और अश्रेष्ठ को अनार्य कहा है। इस बात पर भी हिन्दू अपने आप को आर्य यानी सज्जन न माने तो कोई क्या करे। वेद में सबका धर्म एक बताया है भारत में अनेक धर्म बनाने से साम्प्रदायिकता का माहौल बन जाता है, जो देश को शक्तिहीन बनाता है। सब के संगठन से देश शक्तिशाली बनता है। वेद में मानव जाति एक है यहां अनेक जातियां बना डाली हैं। इस अनेक धर्म और जातियों से क्या-क्या हानियां भारत में हुई और हो रही हैं तथा कब रुकेंगी ज्ञात नहीं-

1. धर्म-जाति के कारण भारतियों ने पानीपत के तीनों युद्धों में विदेशियों से हारकर देश पर तन्त्र करवा दिया।

2. धर्म-जाति के नाम पर राजनैतिक पार्टियां बनी। घोटाले, भ्रष्टाचार और आय से अधिक सम्पति के नेताओं पर आरोपों के कारण भारत विकसित देशों की श्रेणी से दूर हो गया।

3. धर्म-जाति तोड़कर युवक-युवती विवाह रच कर मारे जाते हैं और उनके अभिभावक जेलों की हवा खाते हैं।

4. धर्म-जाति के नाम पर आरक्षण का बखेड़ा देश के रास्तों को रोकता है।

अतः भारतवासियों का संगठन केवल और केवल वेद के झंडे के नीचे ही हो सकता है। इसलिए आर्यो का इतिहास पूरा देश पढ़ेगा तब ही बात बनेगी। आर्यो की बात सुनों इसमें देश और संसार का भला है।

-सत्यवीर आर्य

पृष्ठ 1 का शेष नया वर्ष ...

नहीं है। बल्कि उपचार का समय ही अब आया है। हम वर्षो से ज्वलनशील पदार्थो के लिए अरब देशों पर निर्भर है। जबकि हमें अपने उर्जा के स्रोत कुछ यूरोपीय देशों की तरह हवा, पानी और धूप पर करनी थी। आज धूप के द्वारा सौर उर्जा का निर्माण हो रहा है जिसमे न के बराबर प्रदूषण है। ठीक इसी तरह पवन भी उर्जा का बड़ा स्रोत बन सकती है और पानी से बनी उर्जा का हम उपयोग कर ही रहे है।

दूसरा हमें अपना पब्लिक ट्रांसपोर्ट मजबूत करना होगा। क्योंकि धनी देश वो नहीं होता जिसके हर नागरिक पर गाड़ी हो बल्कि धनी देश वो होता है जिसके धनी निवासी भी पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करते हैं। आज यूरोप के कई देशों में सिर्फ पब्लिक ट्रांसपोर्ट ही मजबूत नहीं है बल्कि यहां हवा की लगातार मॉनिटरिंग होती है और जैसे ही हवा में प्रदूषण का स्तर अधिक पाया जाता है तो मेट्रो सेवा फ्री कर दी जाती है ताकि लोग मोटरसाइकिल या गाड़ी छोड़कर ट्रेन में आ जायें इससे प्रदूषण स्तर को तुरंत कम करने में काफी मदद मिलती है। तीसरा वहां के फुटपाथ काफी चौड़े होते है जिसपर लोग आराम से पैदल चल लेते हैं जबकि हमारे देश में फुटपाथ दुकानों और गाड़ियों के पार्किंग स्थल में बदल चुके है कई जगह तो फुटपाथों पर बाजार तक लगते हैं। सरकार को इस दिशा ने कठोर कदम उठाने होंगे।

इन सब के बाद हमें उस ओर जाना होगा जो हमारे ऋषि-मुनि बड़ी लम्बी तपस्या कर हमे प्रदान कर गये थे यहाँ से आगे का जीवन हम यदि इनके अनुसार भी जिंए तो भी हमें अनेक कष्टों से छुटकारा मिल सकता है। उसके लिए हमें वायु मॉनिटरिंग उपकरण की जगह हम यदि सप्ताह में एक बार भी यज्ञ करें तो हम अपने आस-पास की वायु को शुद्ध कर सकते है क्योंकि हम प्रकृति को उपकरणों से नहीं जीत सकते वो हमें माता की तरह तभी दुलार देगी जब हम पुत्र की भांति उसकी सेवा करेंगे। यहां उदाहरण स्वरुप नेपाल त्रासदी और उत्तराखंड त्रासदी समेत पूरे विश्व के भूकंप झटकों से ले सकते हैं।

-राजीव आर्य

आर्य समाज जहांगीरपुरी दिल्ली का 37वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जहांगीरपुरी दिल्ली का 37वां वार्षिकोत्सव एवं 11 कुण्डीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ 29 नवम्बर 2015 को 'के' ब्लॉक रामलीला पार्क जहांगीरपुरी में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में ब्रह्मा आचार्य विकास जी रहे। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री राजीव आर्य जी एवं अन्य महानुभाव उपस्थित हुए।

-प्रधान, दिनेश चन्द शर्मा

पृष्ठ 1 का शेष दिल्ली एवं आस-पास ...

चांदनी चौक में यज्ञ से हुआ। यज्ञोपरान्त दिल्ली एवं दिल्ली एन.सी.आर. की विभिन्न आर्य समाजों द्वारा आयोजित विशाल शोभायात्रा चांदनी चौक से दिल्ली के रामलीला मैदान पहुंची। पूरे रास्ते महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी, स्वामी श्रद्धानन्दजी एवं आर्य समाज के नारे गूंजते रहे। शोभायात्रा में आर्य समाज के संतों, स्कूली बच्चों, बुजुर्गों एवं माताओं की अपार भीड़ ने दिल्ली की जनता को अचम्भित कर दिया। यह विशाल शोभायात्रा रामलीला मैदान पहुंचकर एक विशाल जनसभा में परिवर्तित हो गयी। इस महासभा की अध्यक्षता महाशय धर्मपालजी एम.डी.एच. ग्रुप चेयरमैन ने की। स्वामी सम्पूर्णानन्दजी ने अपने उद्‌बोधन में स्वामी श्रद्धानन्दजी के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'स्वामी श्रद्धानन्दजी पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने दोनों बेटों इंद्र और हरिश्चन्द्र को गुरुकुल में अध्ययन के लिए भेजा, स्वामीजी ने जामा मस्जिद के गुंबद पर बैठकर वेद मंत्रों का जाप किया, अकाल तख्त पर बैठकर वेद मंत्रों का उच्चारण किया, स्वामी जी को मारने वाला कोई हिन्दू नहीं मुसलमान था, ऐसा व्यक्ति जिसने वैदिक धर्म की रक्षा के लिए, देश की रक्षा के लिए अपने जीवन को हंसते हुए बलिदान कर दिया। ऐसे महान हुतात्मा को भारत रत्न

...शेष पेज 5 पर

पृष्ठ 4 का शेष

दिल्ली एवं आस-पास ...

से सम्मानित किया जाना चाहिए। मैं आप लोगों के सामने यह प्रस्ताव रखता हूं कि ऐसे बलिदानी को भारत सरकार की ओर से भारत रत्न दिया जाना चाहिए?' स्वामी जी के इस प्रस्ताव को उपस्थित जन समूह ने हाथ उठाकर समर्थन दिया।

श्रद्धांजलि महासभा में दिल्ली के मुख्य मंत्री अरविन्द केजरीवाल ने अपने सम्बोधन में कहा 'आर्य समाज ने जो कार्य किए वह हम सभी के लिए अनुकरणीय है।' केजरीवाल ने आगे कहा,'आर्य समाज ने जितना कार्य किया है उतना सरकारों ने भी नहीं किया।' दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येन्द्र जैन ने अपने उद्बोधन में अपने बचपन के संस्मरणों का बखान किया व अपने को अर्द्धआर्य समाजी बताया।

साध्वी उत्तमायति ने स्वामी श्रद्धानन्दजी के संस्मरणों को सुनाते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि,'स्वामी जी ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी एक-एक बुराई को स्वयं अपने मुख से स्वीकार किया। हम भी आज यहां से एक संकल्प लें कि हमारे अन्दर कोई बुराई है तो उसे आज यहां त्याग कर जाएंगे।'

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने दो प्रस्ताव रखे पहला-'आर्य लोग बाहर से आए' यह बात शिक्षा की पुस्तकों से हटाई जाए इसके लिए सरकार से अपील और दूसरा 'मदर टेरेसा को संत की उपाधि देना एक षडयंत्र है' इसलिए इसका विरोध आर्य समाज द्वारा होना चाहिए इसके लिए भी सरकार से अपील की जानी चाहिए। महामंत्री जी के दोनों प्रस्तावों को उपस्थित जनसमुदाय ने अपने हाथ उठाकर सहमति प्रकट की।

महासभा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 'सत्यार्थ प्रकाश ऑडियो एप्प' का विमोचन महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. ग्रुप चेयरमैन के करकमलों द्वारा किया गया। आर्य जगत के भजनोपदेशकों, स्कूली बच्चों ने स्वामी जी के आदर्शों, उद्देश्यों पर आधारित गीतों-भजनों से सामां बांध दिया।

समारोह में दिल्ली एवं आस-पास के आर्य समाजों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान डॉ. रमेश गुप्ताजी अपने युवा बेटे पुनीत आर्य के साथ पधारे, आर्य प्रतिनिधि सभा कनाडा के प्रतिनिधि सुरेन्द्र सूदजी, 90 वर्षीय बुजुर्ग हरवंश लाल कोहली। नितिन्जय चौधरी, आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान सुरेन्द्र कुमार रैली, मंत्री एस.पी. सिंह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान ओम प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष विद्यामित्र ठुकराल। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान शिव कुमार मदान, आर्य समाज मॉडल बस्ती प्रधान अमर नाथ गोगिया, आर्य समाज डोरीवालान प्रधान श्री वागीश शर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान धर्मपाल आर्य, मंत्री सुखवीर सिंह, आर्य केन्द्रीय सभा उपप्रधान कीर्ति शर्मा, आर्य केन्द्रीय सभा उपप्रधान उषा किरण, आर्य समाज शक्ति नगर मंत्री अरुण आर्य, आर्य समाज मॉडल टाउन किशन चन्द आर्य, आर्य समाज जनकपुरी सी-3 पूर्व प्रधान रमेश चन्द्र आर्य केन्द्रीय सभा उपप्रधान राजेन्द्र दुर्गा, आर्य समाज डी.सी.एम. कॉलोनी चन्द्र मोहन आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मंत्री अरुण प्रकाश वर्मा, आर्य समाज विवेक विहार प्रधान गजेन्द्र सिंह, आर्य समाज नांगलराय प्रधान भगवान दास, आर्य समाज हनुमान रोड डा. कर्ण देव शास्त्री, एडवोकेट सुशील त्रिपाठी, प्रेम पाल शास्त्री, बलवीर आर्य, वैदिक धर्म की दुम्दुभी बजाने वाले शुद्धि सभा के आचार्य बलवीरजी, इकबाल सिंह धामाजी, देशपाल सिंह धामा, श्रीमती मधु धामा, राजीव आर्य, पाकिस्तान में जन्में सत्य पाल बरारा, साहित्यकार डॉ. विष्णु वर्धन पालीवाल, राकेश ग्रोवर, एवं दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों, अनाथालयों, आर्य वीर दलों, आर्य वीरांगनाओं, आर्य महिला समाजों, आर्य इत्यादि ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Do good to others to the extent you can.

"The hands that are alike, do not perform equally; the cows calving at the same time do not yield the same milk; the twins do not have the same strength one as the other; two persons of one family do not display equal nature", says the verse.

The tenth book of Rigveda, hymn 117, reveals the virtue of charity. The present verse is the last one of the hymn. The question arises why the theory of inequality is expressed at the end of the hymn that deals with the virtue of charity. The answer is simple. It is the willingness and spirit of charity that is more exxential than the amount a donor donates. Man having a lot of wealth, should not harden his heart towards the needy person famishing for want of nourishment. He should not behave as a miser to a poor person who comes abegging and is in need. He alone becomes bounteous who offers food to the hungry and helps him who wanders in distress.

True, there is inherent inequality in the capacity of two similar objects. just as two hands of the same person, two milch cows or the pair of twins are equipped with different faculties, so also all mortals on earth do not possess the same strength and capacity to give in charity. But it is unwise to imitate a miser any time. Help, charity, sympathy and service for others are natural virtues of a good man which should be followed by one and all. So, do good to others depending on your capacity and to the extent you can.

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चित्र समं दुहाते।

यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः।। (Rv.x.117.9)

Samau cid dhastau na samam vivistah sammatara cin na samam duhate. yamayos cinna sama viryani jnati cit santau na samam prnitah..

Arise and awake in a righteous way.

The Rigvedic verse is called 'Rk' which means rhythmic poetry. The poetic Rigveda is the storehouse of all knowledge beginning from the tiny grass to the mighty Brahma. The verse says, 'The Rk hymns love him who wakes and watches'. Rigveda welcomes them who incessantly make efforts to acquire knowledge. For a sleeping person, there is no enrichment in intellect. One who has true thirst for knowledge and forsakes inactivity is blessed with the knowledge of Regeda.

Since devotion to work is essential to get peace, devotional music of Samaveda is the solace and support. Man cannot mechanically acquire joy. To be bereft of attachment and sorrow, one should sing and eulogize the glory of the Creator and His creation. The verse says, 'The Saman tunes also bless the one who is ever vigilant".

Says the Lord,"Awake and arise. Try again and again. Make efforts to understand the purepose of life. Remember, enjoying food and sleep in no awakening. Eagerness, devotion and efforts to seek and know the self is true awakening. Such a seeker lives a pure and worthy life. I am always with him and my dwelling is in his friendship and in his heart."

यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तुम सामानि यन्ति।

यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।। (Rv.v.44.14)

Yo jagar tam rcah kamayante you jagara tam u samani yanti.

yo jagar tam ayam soma aa tavaham asmi sakhye nyokah..

The Path of Truth is simple.

The Law of creation has been termed as ' Rta' in the Vedas. Those who observe the law are 'Rtajna' or 'Rtapa'. Taking food through nose rather than through mough against natural law is painful. Disease grasps one who sleeps in day time and not at night. The sages discover truth in the spiritual realm whereas the scientists search for truth through experiments and analyeses in material realm.

Truth is one but falsehood appears in many forms. The Supreme sul is the symbol of truth. His Creation is founded and sustained on truth. Rta is the eternal law and truth is its translation into action. Worthy children are born on consummation according to Rta. Man gets peace following the simple and serene ways of Rta. Rta signifies simplicity and purity. The way contrary to Rta is vulgar and painful. Man' s artificial life is full of pretension and sorrow. Life becomes free and progressive when it moves with the laws of Nature. To oppose the free flow of life is to lead a life of misery and suffering.

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋृतं यते।

नात्रावखादो अस्ति वः।। (Rv.I.41.4)

Sugah pantha anrksara adityasa rtam yate.

natravakhado asti vah..

प्रेरक प्रसंग

वे क्या से क्या बन गये

ऋषि दयानन्जी के सदुपदेशों से जिन महानुभावों के जीवन ने पलटा खाया, श्री लाभचन्द्र जी उनमें से एक थे। उन्होंने कहां ऋषि-दर्शन किये यह हमें पता नहीं, परंतु पण्डित विष्णुदत्तजी एडवोकेट के एक लेख से यह पता लगता है कि उन्होंने ऋषि-दर्शन किये। वे स्यालकोट के रहने वाले थे। आर्य समाज के आरंभिक काल में स्यालकोट में एक और आर्य पुरुष इसी नाम के थे। वे वकील थे। जिन लाभचन्दजी की चर्चा हमने छेड़ी है, ये भी आर्य समाज के एक प्रमुख गायक और कवि हुए हैं। वे स्वल्प शिक्षित थे। पंजाबी में बहुत अच्छे भजन बनाते थे।

उनमें जोश बहुत था। आर्य समाज की सेवा करने के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। आर्य समाज में आने से पूर्व वे जुआ खेलते और खिलाते थे। उन दिनों जुआबाजों के ग्रुप मेलों पर जाकर ताश के पत्तों के खेल से भोले-भाले लोगों को लूटते थे। इनकी चतुराई को समझना कठिन होता था।

लाभचन्दजी ने यह धन्धा छोड़कर एक दुकान चला ली, फिर एक वकील के मुंशी बन गये। आर्य समाज के प्रचार की धुन लगी तो सारे पंजाब में घूम-घूमकर प्रचार करने लगे। जब आर्य समाज का यह सेवक मेलों पर प्रचारार्थ जाता तो ताश से जुआ खेलने वाले लाभचन्दजी का बहुत मान-सम्मान करते, उनकी चापलूसी भी करते।

मान-सम्मान इसलिए करते थे कि लाभाचन्दजी उनमें से निकलकर इतने ऊंचे उठ गये। चापलूसी इसलिए करते थे कि लाभचन्द उनकी चालाकियों की पोल न खोल दें। श्री पण्डित विष्णुदत्तजी ने लिखा है कि एक मेले पर उन्होंने अपनी आंखों से देखा कि ताश के पत्तों से लूटने वाले इतना पुलिस से नहीं डरते थे जितना कि लाभचन्दजी से। वे समझते थे कि पुलिसवालों का मुख तो वे पैसे से बन्द कर लेंगे, परंतु लाभचन्द तो प्रलोभन में फंसने वाला नहीं। लाभचन्दजी के कारण वे लोग ग्रामीणों को साहसपूर्वक न लूट पाते थे।

लाभचन्दजी शुभकर्मों की प्रबल प्रेरणा दिया करते थे। इसके लिए वे अपने भजनों में मृत्यु व वैराग्य का बहुत अच्छा चित्र खींचा करते थे। भरपूर जवानी में ही उनमें ईश्वर भक्ति और वैराग्य का भाव बहुत अधिक था। आपने लम्बी आयु न भोगी।

आर्य समाज के इतिहास में आपने एक विशेष कार्य किया जिसे आर्य समाज आज भूल चुका है। यह लाभचन्द जी ही थे जिन्होंने दलितों में, श्रमिकों में आर्य समाज को लोकप्रिय बनाया। जो आर्य समाज आरम्भ में पढ़े-लिखे लोगों और दुकानदारों तक सीमित था, उस आर्य समाज को दलित वर्ग तक पहुंचाया।

स्यालकोट सारे भारत में दलितोद्धार का सबसे बड़ा केन्द्र बना तो लाभचन्दजी के कारण। स्याल कोट का अनुकरण सारे पंजाब और फिर सारे भारत के आर्य समाजों ने किया। एक स्वल्प शिक्षित ने अपने तपोबल से आर्य समाज के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ा। उनकी अनूठी तड़प पर सब बलिहारी थे। **-साभार**

तड़पते वाले तड़पाती जिनकी कहानियां

संस्कृतम्

पर्यावरण-संरक्षणम्

वायुवाकाश-जलादीनां, प्रदूषण-निवारणम्।
संरक्षणं च भूम्यादेः, पर्यावरण-रक्षणम्।।
यत् परितः आवृणोति आच्छादयति तत् पर्यावरणम्। वायुमण्डलं जलमण्डलं भूमण्डलम् च जगत् आच्छादयति, अतः पर्यावरण-शब्देन मृत्तिका जलं, वायुः, प्रकाशः, आकाशश्चे गृह्यन्ते। यद् एतान् दूषयति, तत् पर्यावरण-दूषकं कथ्यते।
मुख्यानि प्रदूषणानि सन्ति- 1. वायु-प्रदूषणम् 2. जल-प्रदूषणम् 3. भूमि-प्रदूषणम 4. ध्वनि-प्रदूषणम्।
वायु-मण्डले विविधगैसाः विशेषानुपाततः सन्ति। औद्योगिकीकरणेन गैसानाम् अनुपाताः विनाश्यन्ते, अतः वायु-प्रदूषणं भवति।
वायु-प्रदूषण-निराकरणार्थम् एते उपायाः करणीयाः। धूम्रत्याग-पराणां वाहनानां न्यूनता विधेया। वृक्षाणां छेदने निरोधः स्यात्। वृक्षारोपणं विधेयम्। परिमाणु-विस्फोटे प्रतिबन्धः स्यात्।
तडाग-नद्यादीनां जलं मल-मूत्रादि-त्यागेन, यन्त्रालयादीनाम् अपशिष्टस्य प्रवाहेण च प्रदूष्यते, अतः तडाग-नद्यादिषु मलमूत्रादिकम् अन्यद् अपशिष्टं च न प्रवाह्यम्।
यन्त्रालयादीनाम् अपशिष्टस्य प्रक्षेपणेन भूमेः उर्वराशक्तिः क्षीयते, अतः खाद्यान्नं प्रचुरं न भवति। भूरक्षणार्थम् औद्योगिकम् अपशिष्टम् अन्यत्र क्षेप्यम्।
ध्वनि-विस्तारक-यन्त्रादीनां प्रयोगेण तेषाम् उच्चध्वनिः कर्णरागं शिरोवेदनां रक्तचापे वृद्धिं च करोति। एवं ध्वनि- प्रदूषणं विविध-रोगाणां जनकः। तस्य निवारणार्थम् उच्च ध्वनि-कारकेषु यन्त्रेषु प्रतिबन्धः स्यात्। उक्तं च वेद-पुराणदिषु-
भूमिं दृंह, पृथवीं मा हिंसीः। यजु. 13.18
दिवं दृंह, दिवं मा हिंसीः।। यजु. 15.64
अप्सु-अन्तर-अमृतम्, अप्सु भेषजम्। ऋग्. 1.23.19
पद्मपुराणे नदीषु मल-मूत्रादि-त्यागो निषिध्यते।
मूत्रं वाऽथ पुरीषं वा, गंगातीरे करोति यः।
न दृष्टा निष्कृतिस्तस्य, कल्पकोटि-शतैरपि। पद्म पु.

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी श्रृंखला में आगामी 2 माह में जनवरी 2016 से मार्च 2016 के मध्य 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियां निश्चित कर दी गई हैं।

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। **फार्म www.thearyasamaj.org** से डाउन लोड किए जा सकते हैं। फार्म की फोटो प्रति भी मान्य है।

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)
दिनांक 14 फरवरी, 2016
आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, रतलाम (म.प्र.)
अन्तिम तिथि 30 जनवरी, 2016
संयोजक : डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070
सम्पर्क : श्री भगवान दास अग्रवाल मो. 08989467396

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)
दिनांक 27 मार्च, 2016
आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू
अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016
संयोजक : श्री राकेश चौहान- 09419206881

विशेष जानकारी के लिए राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा, मो. 09414187428 से संपर्क करें।

डॉ. कर्णदेव शास्त्री सम्मानित

सूरज भान डीएवी पब्लिक स्कूल बसन्त विहार न. दिल्ली में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द पुण्य स्मृति समारोह के अवसर पर आर्य प्रादेशिक सभा एवं डीएवी स्कूल प्रबन्धक समिति ने दिनांक 19 दिसम्बर 2015 को संयुक्त रूप से वैदिक विद्वान डॉ. कर्णदेव शास्त्री दिल्ली को वैदिक सिद्धान्तों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया।

आर्य समाज बिड़ला लाईंस का

86वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बिड़ला लाईन्स का 86वां वार्षिकोत्सव दिनांक 13 दिसम्बर 2015 को सामवेद यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री अमर नाथ गोगिया (प्रधान आर्य समाज मॉडल बस्ती) ने की। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. कैलाश चन्द शास्त्री थे, वैदिक वक्ता डॉ. कैलाश चन्द्र एवं श्रीमती रचना आहूजा थे। कार्यक्रम में श्री हरबंसलाल कोहली (का. प्रधान) भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा एवं श्री भूदेव आर्य मंत्री आर्य समाज जे.जे. कॉलोनी बजीरपुर का अभिनन्दन शॉल व प्रशस्ति पत्र देकर समाज की ओर से किया गया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज मंत्री श्री सुधीर घई द्वारा किया गया।

आर्य समाज मन्दिर नीलोखेड़ी द्वारा

डेंगू एवं रोग निवारण यज्ञ आयोजित

आर्य समाज मन्दिर नीलोखेड़ी द्वारा महाशय जी की प्रेरणा से नीलोखेड़ी शहर में डेंगू व अन्य बीमारियों के निवारण हेतु नीलोखेड़ी के विभिन्न क्षेत्रों स्कूल एरिया, स्टेशन स्रोत, पॉल्ट्री ऐरिया एवं चौथा अस्पताल क्षेत्र में सम्पन्न किये। इस यज्ञ श्रृंखला में आर्य समाज के प्रधान ब्रतपाल बतरा, सचिव सुशील कुमार, उप प्रधान सुभाष कंवल चन्द सलूजा, सुधीर खुराना, इन्द्र सिंह तथा स्वामी श्रृद्धानन्द सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल स्टाफ व क्षेत्रीय महानुभावों ने बड़ी श्रद्धा के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

-ब्रतपाल बतरा, प्रधान

आर्य विद्या सभा गुरुकुल आश्रम सलखिया का

भव्य रजत जयंती महोत्सव

आर्य विद्या सभा गुरुकुल आश्रम सलखिया दिनांक 15 से 17 जनवरी 2016 को रजत जयंती महोत्सव आयोजित होगा। **-महीपत लाल आर्य, महामंत्री**

आर्य समाज मंदिर अंधेरी (प.) मुम्बई का 29वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मंदिर अंधेरी (प.) मुम्बई का 29वां वार्षिकोत्सव समारोह 24 से 27 दिसम्बर 2015 तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विश्व शांति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान वेद प्रवक्ता आचार्य श्री प्रकाश जी श्रोत्रिय रहे।

-प्रधान, हरीश आर्य

आर्य समाज जवाहर नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर का वार्षिकोत्सव 26 से 29 नवम्बर 2015 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पं. बाल कृष्ण जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में मंगल यज्ञ किया गया। पं. सुखपाल जी के भजन एवं डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के उत्तम प्रवचन हुए।

काशी शास्त्रार्थ स्मृति वैदिक महोत्सव सम्पन्न

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड में आयोजित 146वें वार्षिक शास्त्रार्थ स्मृति के अवसर पर गत वर्षों की भांति तीन दिवसीय वैदिक महोत्सव 21 से 23 नवम्बर 2015 तक उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी ओड़िशा का षष्ठ वार्षिकोत्सव

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी ओड़िशा का षष्ठ वार्षिकोत्सव 29 से 31 जनवरी 2016 को आयोजित होगा। इस त्रिदिवसीय महोत्सव पर अनेक प्रेरक कार्यक्रम व सम्मेलन होंगे जिसमें विद्वानों, साधु-सन्तों व सद्गृहस्थियों का मार्गदर्शन व सान्निध्य प्राप्त होगा।

चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज नेमदारगंज, नवादा (बिहार) का 29 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ सह मगघ प्रमण्डलीय आर्य महासम्मेलन पूरी भव्यता से सम्पन्न हो गया जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य हरि शंकर जी अग्निहोत्री (आगरा), मंत्र पाठ हाथरस की बहन सुश्री राम कुमारी जी आर्ष वेदमणि एवं सुश्री वंदना (सूरत) द्वारा सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज राम नगर, गुड़गांव द्वारा आध्यात्मिक व वेद प्रचार

आर्य समाज राम नगर, गुड़गांव द्वारा एक सप्ताह तक आध्यात्मिक सत्संग अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किया गया।

खुले स्थान पर परिवारों ने यज्ञ किया। इस अवसर पर आर्य जगत के वैदिक विद्वान डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री तथा आचार्य योगेन्द्र शास्त्री के प्रवचन हुए जिसमें नित्य प्रति यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग करने तथा वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

28 दिसम्बर 2015 से 3 जनवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31 दिसम्बर 2015/ 1 जनवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 दिसम्बर, 2015

आर्य समाज अवकाश सूची

क्र.सं.	पर्व/व्योहार	दिनांक	दिन
1.	मकर संक्रान्ति	14 जनवरी 0216	गुरुवार
2.	गणतन्त्र दिवस	26 जनवरी 2016	मंगलवार
3.	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	04 मार्च 2016	शुक्रवार
4.	बोधोत्सव (महाशिवरात्रि)	07 मार्च 2016	सोमवार
5.	दुलहण्डी	24 मार्च 2016	गुरुवार
6.	आर्य समाज स्थापना दिवस	8 अप्रैल 2016	शुक्रवार
7.	रामनवमी	15 अप्रैल 2016	शुक्रवार
8.	स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त 2016	सोमवार
9.	रक्षाबंधन	18 अगस्त 2016	गुरुवार
10.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	25 अगस्त 2016	गुरुवार
11.	गांधी जयन्ती	2 अक्टूबर 2016	रविवार
12.	विजय दशमी(दशहरा)	11 अक्टूबर 2016	मंगलवार
13.	महर्षि निर्वाणोत्सव(दीपावली)	30 अक्टूबर 2016	रविवार
14.	भैयादूज	1 नवम्बर 2016	मंगलवार
15.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	23 दिसम्बर 2016	शुक्रवार

प्रतिष्ठा में,

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2016 के अवसर पर प्रगति मैदान में होगा

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार यज्ञ

उद्घाटन : 9 जनवरी- प्रात: 11 बजे | समापन: 17 जनवरी- रात्रि 8 बजे

हिन्दी साहित्य स्टाल हॉल नम्बर 12 ए, स्टाल नम्बर 308-317

अंग्रेजी साहित्य स्टाल हॉल नम्बर 6, स्टाल नम्बर 108

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज के साहित्य प्रचार स्टालों पर पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साह वर्धन करें

-सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक, मो. 9540012175, 9350502175

त्रिदिवसीय पुरोहित एवं उपदेशक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

त्रिदिवसीय पुरोहित एवं उपदेशक प्रशिक्षण शिविर का आर्य समाज-ग्रेटर कैलाश-1, बी/-31सी, कैलाश कॉलानी, नई दिल्ली-48 में 16-18 जनवरी 2016 को आयोजन होगा। डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. विनय विद्यालंकार एवं आचार्य विरेन्द्र विक्रम प्रशिक्षिकों को प्रशिक्षित करेंगे। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि श्री सुरेन्द्र प्रताप (46678389, 9953782813)/ श्री राजीव चौधरी (9810014097) को पंजीकृत करायें।

शोक समाचार

श्री जगवीर सिंह की माता जी का निधन

आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर के पूर्व मंत्री श्री जगवीर सिंह जी की माता श्रीमती हुकम कौर का दिनांक 19 अक्टूबर 2015 को 93 वर्ष की आवस्था में निधन हो गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गयीं हैं। माता जी के पौत्र श्री पदम सिंह, आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर में सहाकोषाध्यक्ष पद पर रहते हुए सेवाकार्य में संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह